दिनांक 11 सितम्बर, 1985

सं. श्रो वि./एफ.डी./161-85/37401-वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ॰ देकनो प्रीसीजन टूब्ज, 2 एक/ 103 एन. शाई. टो., फ़ारीदाबाद, के श्रमिक श्री इन्द्र पाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हुतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

वया श्री इन्द्र पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदौर है?

सं. श्रो.वि./श्रम्बाला । 1 0-85/37408.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. बराबा कोशोग्नेटिव मार्किटिग-कम, प्रोसैंसिंग सोसाईटी लि., बराडा (श्रम्बाला), के श्रमिक श्री पूर्ण चन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रेधीन गठित श्रम न्यायाबय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री पूर्ण चन्द की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं॰ श्रो॰वि॰ श्रम्बाला / 112 85 / 37414 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ बराड़ा कोग्रोप्रेटिब

मार्किटिंग-कम-प्रोसैसिंग सोसाईटी लि., बराड़ा (अम्बाला). के श्रमिक श्री बलवन्त राय तथा उस के प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारी प्रदान की गई गिवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल. 1984, द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे. लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच यातो ... विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

वया श्री बलवन्त राय की सेवाध्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./ग्रम्बाला/109-85/37420.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं बराड़ा कोग्रोप्रेटिव मार्किटिंग-कम-प्रोसैसिंग सोसाईटी लि., बराड़ा (ग्रम्बाला), श्रमिक श्री हंस राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3(44)-84-3-शम, दिनांक 18 अश्रैल, 1984, द्वारा उत्तर श्रीधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अन्बाला, को विवादशस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचांट तीन मास में देने के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री हंस राज की सेवाभ्रों का समापन त्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?